E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का मनोवैज्ञानिक अध्यय

कीरथ सिंह

शोधार्थी शिक्षाशास्त्र,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/06/2025

Paper date Publishing Date

10/06/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15824760

IMPACT FACTOR
5.924

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध प्रपत्र कार्य में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन सुनियोजित रूप में किया गया है। वर्तमान अध्ययन की समस्या यह है कि उच्च्तर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का स्तर क्या होगा प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन में सम्भाव्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। इसके लिये कक्षा हायर सेकेण्डरी के विद्यार्थियों के आंकड़ों का संग्रहण किया गया।

सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन आषुतोश कुमार द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी मूल्य का उपयोग किया गया है। परिणाम से स्पष्ट होता है शहरी क्षेत्र का उसके समायोजन में परिवेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वह अपना सामाजिक समायोजन उचित प्रकार से कर सकता है अर्थात उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं देखा गया है।

भगवान की सभी रचनाओं में से मानव जीवन सबसे पवित्र है। मानव जीवन के दो दृ ष्टिकोण है पहला जैविक तथा दूसरा सामाजिक। पोषण व प्रजनन मानव जीवन के जैविक पहलू हैं तो उसी प्रकार शिक्षा मानव जीवन के सामाजिक पहलू को बनाता है। शिक्षा छात्रों के बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करके उसकी उन्नति सुनिश्चित करने में सहायक होता है। शिक्षा ही छात्रों को सचेत बनाकर जीवन की विभिन्न जिम्मेदारियों को पूरा करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि छात्रों के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिये व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है। सत्य तो यह है कि शिक्षा से इतने अधिक लाभ है कि उनका वर्णन करना कठिन है। इस संदर्भ में यहाँ केवल इतना कह देना ही पर्याप्त होगा कि शिक्षा माता के समान पालन–पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्ग–दर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भांति सांसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के ही द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है क्योंकि वह सामाजिक–भौतिक परिवेश में पैदा होता है और वहीं पर पलता है। जीवन को चलाने के लिए पर्यावरण की अपेक्षाओं तथा इन अपेक्षाओं को पूर्ण करने के लिए मनुष्य के प्रयासों के बीच संतुलन अथवा मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों पर निर्भर करता है। व्यक्ति की जव स्वाभाविक इच्छा की पूर्ति नहीं हो पाती है तो वह धीरे–धीरे वह उन अप्रिय स्थिति में समझौता कर लेता है, इसी समझौते को ही समायोजन कहते हैं।

सामाजिक समायोजन वह प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति जितना वह अपने आपमे समायोजित होने की आवश्यकता रखता है उतनी ही सामाजिक समायोजन की है। सामाजिक परिवेश का दायरा व्यक्ति के घर व परिवार से शुरू होकर विष्व–बंधुत्व की सीमाओं तक जाता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संबंधित साहित्य का पुर्नवालोकन

- **डमबू बी. इमेट (1990)** ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन का एक अध्ययन, प्राथमिक विद्यालयों में परीक्षणों के माध्यम में भविष्यवाणी करना पर किया। जिसमें निष्कर्ष में पाया गया कि अच्छा अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का समायोजन अच्छा होता है और षैक्षिक सम्प्राप्ति द्वारा समायोजन के बारे में अच्छे ढंग से भविष्यवाणी कर सकते हैं। तथा यह भी बताया कि अंग्रेजी के परीक्षणों को बुद्धि परीक्षण के साथ जोड़ दिया जाय तो भविष्यवाणी की क्षमता में सुधार होता है।[1]
- **विनसन के (2001)** ने विष्वविद्यालयी छात्रों के समायोजन पर अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि एक ही पारिवारिक वातावरण के छात्रों एवं छात्राओं के समायोजन में विद्यालयी वातावरण का कोई विशेष असर नहीं पड़ता है।[2]
- **गुप्ता, नीरज (2010)** ने विद्यालय जाने वाले विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किशोरियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरियों ग्रामीण की तुलना में अधिक सामाजिक समायोजित थी। निजी विद्यालयों की तुलना में राजकीय विद्यालयों की छात्रायें कम समायोजित थीं, हिन्दी माध्यम की तुलना में अंग्रेजी माध्यम से अध्ध्यन कर रही किशोरियों अधिक समायोजित थी।[3]
- **तिवारी, सुरेष (2014)** ने व्यक्तित्व समायोजन में सामाजिक समूह और उनके बुद्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया जिनमें निष्कर्ष पाया कि विभिन्न वर्गों एवं बुद्धि प्राप्तांक में सार्थक अंतर पाया गया। तथा छात्रों एवं बालिकाओं के बुद्धि प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्य वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग में समायोजन क्षमता अधिक पायी गयी।[4]
- **सिंह ज्योति (2016).** इन्होंने कामकाजी माता व घरेलू माता के बच्चों पर समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि पर तुलनात्मक अध्ययन किया तथा कुल 100 विद्यार्थियों पर भिलाई नगर क्षेत्र पर अध्ययन कर पाया कि बच्चों को यही निर्देशन व मार्गदर्शन दिया जाये तो माता के काम करने का उनके समग्र विकास पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़े। इसलिए माता के कामकाजी होने का बच्चों के लिए हानिकारक नहीं है। कामकाजी एवं घरेलू माताओं के छात्रों एवं बालिकाओं में समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया अतः माता का कामकाजी होना बच्चों के समायोजन पर प्रभाव डालता है।[5]

इस शोध समस्या में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन किया गया है। तथा इसमें यह देखा जायेगा कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन का प्रभाव परिवेश के आधार पर पड़ता है अथवा नहीं। बच्चे अपनी सामाजिक बुद्धि का सही समय व स्थान पर प्रयोग करके अपनी सूझ–बूझ का परिचय देते हैं तथा अपनी सामाजिक बुद्धि के द्वारा बहुत जटिल कार्यों को भी सरलता से कर लेते हैं और अपने सामाजिक क्षेत्र या परिवेश में समायोजन भी उचित प्रकार से कर पाते हैं, प्रस्तुत समस्या के अंतर्गत उच्चतर माध्यमिक के बच्चों की सामाजिक समायोजन क्षमता किस प्रकार की है और उसका प्रभाव परिवेश के आधार पर पड़ता है या नहीं इसका अध्ययन सुनियोजित रूप से किया गया है।

प्रस्तावित शोध समस्या जो कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन इसमें शोध की आवश्यकता एवं महत्व गहन रूप से है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले किशोर शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राऐं

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अपनी बुद्धि का उपयोग करके किस प्रकार अपने आपको समायोजित करते हैं व अपनी समस्या का हल ढूँढ़ लेते हैं एवं सामाजिक समायोजन के द्वारा वह पर्यावरण की अपेक्षाओं तथा इन्हें पूर्ण करने के लिये प्रयास करते हैं।

अतः प्रश्न यह उठता है कि क्या उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन का स्तर एक समान रहता है अथवा इसमें कोई अंतर पाया जाता है। एवं उनके परिवेश का प्रभाव पड़ता है या नहीं।

शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राऐं के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन में सम्भाव्य न्यादर्श विधि (यादृच्छिक विधि) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु उच्चतर माध्यमिक के जिसमें शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के 300 छात्र एवं 300 छात्राऐं जिनकी कुल संख्या 600 है।

शोध अध्ययन के लिये सामाजिक समायोजन मापनी का इस्तेमाल किया गया। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन आशुतोष कुमार द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग करके किया गया। सामाजिक समायोजन की विष्वसनीयता 0.88 है। तथा वैधता 0.67।

तालिका क्रमांक–1

सामाजिक समायोजन मापनी पर विद्यार्थियों के मध्यमान मानक विचलन तथा टी मान

सामाजिक समायोजन मापनी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	df	t मूल्य	परिणाम
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी	300	56.35	6.86	598	1.72	0.01 स्तर पर असार्थक
शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी	300	57.25	5.98			

*0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' का सारणी मान = 2.58

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 में सामाजिक समायोजन क्षमता मापनी पर प्राप्त हायर सेकेण्डरी स्तर के 300 छात्र तथा 300 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्रदत्तों का कुल सामाजिक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 56.35 व 57.25, प्रमाणिक विचलन क्रमशः 6. 86 व 5.98 तथा उनके मध्य टी मूल्य 1.72 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के स्तर कि= 598 पर सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है अतः यह स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के हायर सेकेण्डरी स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है। अतः हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

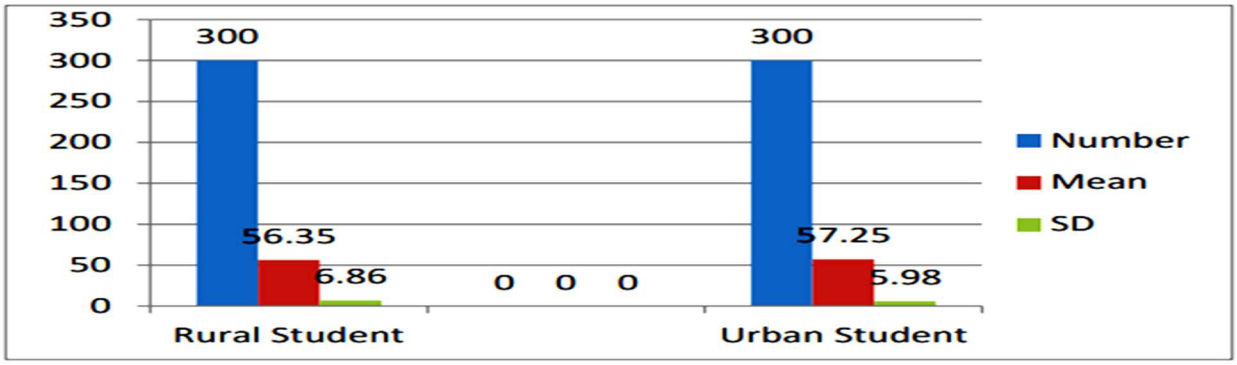

स्वतंत्र अंश 598, 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं।

सामाजिक समायोजन मापनी की परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है अतः यह स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राऐं के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। अतः हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिवेश का छात्रों के समायोजन पर धनात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है, चाहे छात्र शहरी छात्र एवं छात्राऐं दोनों ही का सामाजिक समायोजन बेहतर पाया जाता है। वे अपने क्षेत्र विशेष या आसपास के परिवेश में अपने आप को भलीभांति समायोजित कर सकते हैं।

भ्व$_2$ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य जाति के छात्रों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है।

उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन के लिए हायर सेकेण्डरी के 150 षहरी क्षेत्र के छात्रों का तथा 150 शहरी क्षेत्र के छात्राओं के सामाजिक समायोजन परीक्षण के मूल्यांकन के पश्चात संकलित प्राप्तांकों को व्यवस्थित किया गया तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग के प्रदत्तों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर दोनों प्रतिदर्शों के प्रदत्तों का सत्यापन टी मान ज्ञात कर किया गया है। विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका 2 में दर्शाया गया है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

तालिका क्रमांक – 2

सामाजिक समायोजन मापनी पर छात्रों के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' मान

सामाजिक समायोजन मापनी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	df	t मूल्य	परिणाम
ग्रामीण क्षेत्र के छात्र	150	56.17	4.92	298	0.30	0.01 स्तर पर असार्थक
शहरी क्षेत्र के छात्र	150	56.34	4.96			

*0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' का सारणी मान = 2.58

दण्डआरेख संख्या – 2

सामाजिक समायोजन मापनी पर ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों के मध्यमान का दण्डआरेख

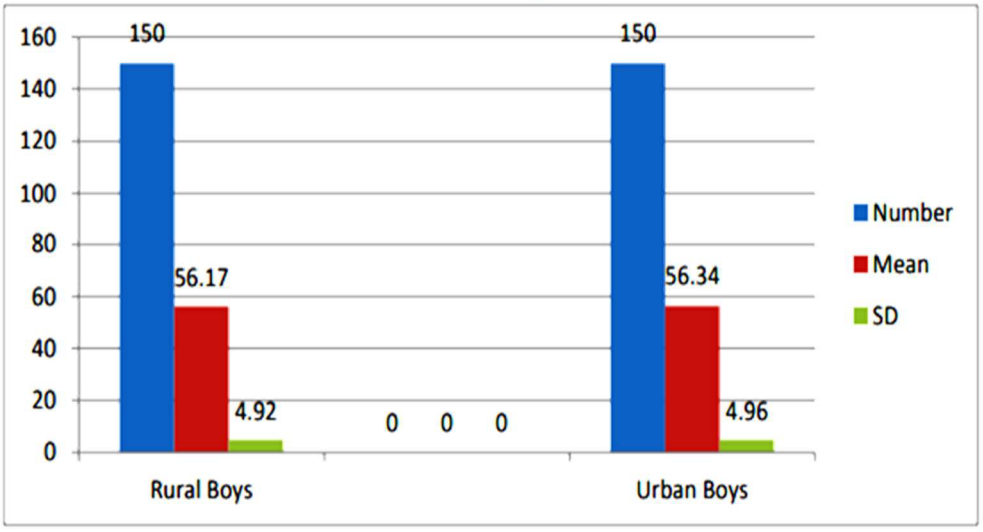

स्वतंत्र अंश 298, 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

व्याख्या–

प्रतिपादित परिकल्पना 2 में सामाजिक समायोजन मापनी की परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है अतः यह स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत षहरी क्षेत्र के छात्रों एवं शहरी क्षेत्र के छात्राओं के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। अतः हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

कारण– इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवेश का छात्रों के समायोजन पर धनात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है, चाहे सामान्य जाति का छात्र एवं छात्राऐं शहरी हों दोनों का ही सामाजिक समायोजन बेहतर पाया जाता है। वे अपने क्षेत्र विशेष या आसपास के परिवेश में अपने आप को भलीभांति समायोजित कर सकते हैं।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अतः माता–पिता को चाहिये कि अपने छात्र एवं छात्राओं को अपना ज्यादा से ज्यादा समय प्रदान करें, जिससे कि उनका सामाजिक बुद्धि का विकास संभव हो पायेगा। सामाजिक विकास के फलस्वरूपय ही वे आपसी सहयोग के द्वारा उचित सामाजिक समायोजन भी कर पायेंगे। छात्र एवं छात्राऐं समाज में पैदा होता है तथा समाज के बीच रहकर ही बड़ा होता है जिसके कारण उसमें स्वतः ही सामाजिक समायोजन का गुण आ जाता है, फिर भी कुछ छात्र सामाजिक समायोजन नहीं कर पाते। अतः इन विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन का विकास करने हेतु अभिभावकों व शिक्षकों को प्रयास करना चाहिये कि उनमें सामाजिक समायोजन का गुण किस प्रकार विकसित की जाये जिससे कि वे उसका उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में कर सकें एवं अपना व देश के विकास में गहयोग प्रदान कर सके।

संदर्भ सूची

1. डमबू बी. इमेट (1990), एजुकेशनल एज ए फैक्टर ऑफ सोशल एडजस्टमेन्ट ऑफ एडोल्सेन्ट गर्ल्स एक्रास डिफरेन्ट लेवल्स ऑफ सोसियो इकोनॉमिक स्टेट्स, पी–एच.डी. पंजाब यूनिवर्सिटी, वाई एम.बी. बुच फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च–11, पृ. 820
2. विनसन के (2001), अ स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट आन यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स (फिफ्थ एडीसन) एन.जे., पृ. 19
3. गुप्ता, नीरज (2010), कामकाजी माता व घरेलू माता के छात्रों व बालिकाओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन। लघुशोध प्रबंध पं. रविशंकर शुक्ल विष्वविद्यालय रायपुर, पृ. 63
4. तिवारी, सुरेष (2014), ए स्टडी ऑफ द पर्सनॉलिटी एडजस्टमेंट इन रिलेशन टू सोशल ग्रुप एण्ड देयर इन्टेलीजेन्स, पूर्वांचल जर्नल ऑफ एजुकेशन स्टडीज, पृ. 5
5. सिंह ज्योति (2016), हाईस्कूल के विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन का एक अध्ययन, प्राथमिक विद्यालयों में परीक्षणों के माध्यम से भविष्यवाणी करना, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजी वैल्यूम पृ. 91